अध्याय 24

वाचा का सत्यापन

निर्गमन 24, परमेश्वर का इस्राएलियों के साथ अध्याय 19 में किए गए वाचा की सत्यापन का विश्लेषण करता है। परमेश्वर ने मूसा को इस्राएल के पुरनियों को पहाड़ पर उससे भेंट करने के लिए आने को कहा (24:1, 2)। मूसा ने जब लोगों को व्यवस्था दी तो उन्होंने उसका पालन करने का वचन दिया (24:3-8)। तब मूसा, हारून, नादाब, अबीहू और सत्तर प्राचीन पहाड़ पर चढ़ गए, और इस्राएल के परमेश्वर का दर्शन किया और खाया पीया (24:9-11)।

तब यहोवा ने मूसा से कहा कि वह पहाड़ पर चढ़ जाए ताकि परमेश्वर स्वयं "व्यवस्था और आज्ञा" लिख सके (24:12)। मूसा और यहोशू पहाड़ पर दोबारा चढ़ गए, जबकि उन्होंने प्राचीनों को इस्राएलियों के डेरे में ही छोड़ दिया (24:13, 14)। मूसा ने परमेश्वर की महिमा के बादल पर प्रवेश किया, जहाँ वह चालीस दिन और रात तक रहा (24:15-18)।

सत्यापन प्रक्रिया (24:1-11)

परमेश्वर से भेंट करने की आज्ञा (24:1, 2)

[1]फिर उसने मूसा से कहा, "तू हारून, नादाब, अबीहू, और इस्राएलियों के सत्तर पुरनियों समेत यहोवा के पास ऊपर आकर दूर से दण्डवत् करना। [2]केवल मूसा यहोवा के समीप आए; परन्तु वे समीप न आएँ, और दूसरे लोग उसके संग ऊपर न आएँ।"

आयत 1. जब **मूसा** पहाड़ पर ही था तो परमेश्वर ने उसे **"यहोवा के पास" हारून, नादाब और अबीहू और सत्तर पुरनियों** के साथ अपने पास आने के लिए कहा। इस आज्ञा से यह पूर्वाभास होता है कि पहले मूसा पहाड़ से नीचे उतरा और फिर इन पुरनियों के संग पहाड़ पर दोबारा चढ़ गया।

आयत 2. अन्य लोगों को दूर ही रहना था जबकि **केवल मूसा** को **यहोवा के समीप आना था**। हालांकि पूरा इस्राएल परमेश्वर के लिए पवित्र था फ़िर भी मूसा को परमेश्वर के विशेष सेवक के रूप में अलग किया गया।

मूसा वाचा को दृढ़ करता है (24:3-11)

[3]मूसा ने लोगों के पास जाकर यहोवा की सब बातें और सब नियम सुना दिए। तब सब लोग एक स्वर में बोल उठे, "जितनी बातें यहोवा ने कही हैं उन सब बातों को हम मानेंगे।" [4]तब मूसा ने यहोवा के सब वचन लिख दिए; और बड़े सबेरे उठकर पर्वत के नीचे एक वेदी और इस्राएल के बारहों गोत्रों के अनुसार बारह खम्भे भी बनवाए। [5]तब उसने कई इस्राएली जवानों को भेजा, जिन्होंने यहोवा के लिये होमबलि और बैलों के मेलबलि चढ़ाए। [6]और मूसा ने आधा लहू लेकर कटोरों में रखा, और आधा वेदी पर छिड़क दिया। [7]तब वाचा की पुस्तक को लेकर लोगों को पढ़ कर सुनाया; उसे सुनकर उन्होंने कहा, "जो कुछ यहोवा ने कहा है उस सब को हम करेंगे, और उसकी आज्ञा मानेंगे।" [8]तब मूसा ने लहू लेकर लोगों पर छिड़क दिया, और उन से कहा, "देखो, यह उस वाचा का लहू है, जिसे यहोवा ने इन सब वचनों पर तुम्हारे साथ बाँधी है।" [9]तब मूसा, हारून, नादाब, अबीहू और इस्राएलियों के सत्तर पुरनिए ऊपर गए, [10]और इस्राएल के परमेश्वर का दर्शन किया; और उसके चरणों तले नीलमणि का चबूतरा सा कुछ था, जो आकाश के तुल्य ही स्वच्छ था। [11]और उसने इस्राएलियों के प्रधानों पर हाथ न बढ़ाया; तब उन्होंने परमेश्वर का दर्शन किया, और खाया पिया।

ये आयतें लोगों के साथ परमेश्वर की वाचा को स्थिर करने के बारे में विवरण देती हैं। परमेश्वर ने कहा कि अगर इस्राएली लोग उसकी आज्ञा मानेंगे तो वे उसके विशेष लोग बन जाएँगे; इस्राएल ने यह कहते हुए प्रत्युत्तर दिया, "जो कुछ यहोवा ने कहा है वह सब हम नित करेंगे!" (19:8)। फ़िर भी उस समय इस्राएलियों को यह मालूम नहीं था कि परमेश्वर उनसे क्या चाहता है। तुरन्त प्रभाव से, वे उन सब आज्ञाओं को मानने के लिए तैयार थे जिनका चुनाव परमेश्वर करता है। अध्याय 20 के आरम्भ में परमेश्वर ने कुछ विस्तार से इस्राएल को बताया कि वह उनसे किस प्रकार की अपेक्षा रखता है। उसने उनके सम्मुख दस आज्ञाएँ (20:1-21), और साथ ही वाचा की पुस्तक में पायी जाने वाली व्यवस्था (20:22-23:33) प्रकट की। जब इस्राएल ने सुना कि उनके लिए परमेश्वर की इच्छा के बारे में विशेष बातें क्या हैं, तब उनको अवसर दिया गया कि वे परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिए अपने समर्पण को नया कर सकें। तुरन्त प्रभाव से लोगों से पूछा गया, "अब तुम परमेश्वर की आज्ञाओं को जान गए हो, क्या अब भी तुम उनको मानने की इच्छा रखते हो?" लोग इसका उत्तर देने में नहीं हिचकिचाए; और फ़िर से इस्राएल ने प्रमाणित किया, "जितनी बातें यहोवा ने कही हैं उन सब बातों को हम मानेंगे!" (24:3; देखें 24:7)।

इस्राएल के साथ परमेश्वर की वाचा को दृढ़ करने में सात घटनाएँ शामिल थी। (1) मूसा ने व्यवस्था का विवरण दिया और इस्राएल ने परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिए अपनी प्रतिज्ञा को पुनः प्रमाणित किया (24:3)। (2) परमेश्वर के शब्द लिख दिए गए जो वाचा को स्थिरता प्रदान करते हैं (24:4)। (3) इस अवसर

के स्मरण के रूप में सेवा के लिए एक वेदी का निर्माण किया गया (24:4)। (4) तब दृढ़ता के समारोह के भाग के रूप में बलिदान चढ़ाए गए और वेदी पर लहू छिड़का गया (24:5, 6)। (5) फ़िर, पुस्तक से व्यवस्था को पढ़ा गया और फ़िर से लोगों की स्वीकृति का प्रत्युत्तर प्राप्त किया गया (24:7)। (6) वाचा की छाप का वर्णन करते हुए लोगों पर लहू छिड़का गया (24:8)। (7) अन्त में, इस्राएल के पुरनियों ने परमेश्वर की उपस्थिति में वाचा के भोजन में भाग लेते हुए खाया पिया (24:9-11)।

आयत 3. *प्रतिज्ञा को प्रमाणित करना।* पहला, जब **मूसा** पर्वत से नीचे उतरा तब उसने **लोगों को** मौखिक रूप से व्यवस्था की बातें सुना दी। एक साथ खड़े होते हुए - एक होकर, **एक स्वर में** - इस्राएलियों ने परमेश्वर के सम्मुख अपनी विश्वासयोग्यता की प्रतिज्ञा को दोहराया जिसमें व्यवस्था का वर्णन दिया था। उन्होंने कहा, **"जितनी बातें यहोवा ने कही हैं उन सब बातों को हम मानेंगे!"**

आयत 4. *व्यवस्था का लिखा जाना।* दूसरा, **मूसा** ने परमेश्वर के शब्दों को ऊँचे शब्दों से सुनाने के बाद उन्हें **लिख लिया** जिससे यह नि:सन्देह परमेश्वर और इस्राएल के बीच वाचा का एक स्थायी रिकॉर्ड रहे और विशेष रूप से यह उस वाचा की आवश्यकताओं का रिकॉर्ड उपलब्ध करवा सके। प्राचीन निकट पूर्व में वाचा के बारे में यह सामान्य बात थी कि उन्हें लिख दिया जाता था और किसी विशेष स्थान में जमा करवा दिया जाता था जहाँ से इन्हें समय-समय पर फ़िर से प्राप्त किया जा सके और दोहराया जा सके। परमेश्वर ने जो नियम दिए थे **उनको** मूसा ने सम्भावित रूप से उसी समय लिख लिया जब वह पर्वत पर था।

वेदी का निर्माण करना। इसी प्रक्रिया में तीसरा चरण सीनै पर्वत के नीचे एक **वेदी** का निर्माण करना शामिल था। स्पष्ट रूप से इस वेदी का उद्देश्य पूर्ण रूप से बलिदान के लिए एक स्थान उपलब्ध करवाना नहीं था क्योंकि इसका निर्माण **इस्राएल के बारहों गोत्रों के अनुसार बारह खम्भों** के साथ था। बलिदानों के बाद खम्भों के साथ वेदी वहाँ पर वैसी ही रहेगी जो वहाँ पर हुई घटना का स्मरण करवाने के लिए रहे।

आयतें 5, 6. *बलिदानों का चढ़ाया जाना।* चौथा, इस्राएल के कुछ **जवानों** के द्वारा वहाँ पर **होमबलि** और **मेलबलि** चढ़ाई गई। ऊपरी तौर पर इस्राएल में याजकीय कार्यालय स्थापित होने से पहले याजकीय योग्यता में जवान लोग, बलिदानों को चढ़ाने की प्रक्रिया में सेवा कार्य में हाथ बँटाते थे। यहाँ पर जवानों का नाम विशेष रूप से क्यों दिया गया है? सब प्रकार के सांडों, बकरियों और मेमनों के काटे जाने के लिए, अलग-अलग भागों में उन्हें काटने के लिए और उनको लाने और ले जाने के लिए बहुत बल की आवश्यकता रहती थी। वॉल्टर सी. कैसर जूनियर ने यह सुझाव दिया कि ये लोग इस्राएली परिवारों के पहलौठे हुआ करते थे और जब तक लैव्यव्यवस्था याजकों को नियुक्त नहीं कर दिया गया तब तक वे याजकों के रूप में सेवा किया करते थे (देखें गिनती 3:41)।[1] बलि किए गए जानवरों से बहने वाले लहू में से **मूसा** ने **आधा लहू** लिया और [उसे] **वेदी पर छिड़क** दिया। यह क्रिया सम्भावित रूप से वेदी को समर्पित करने के लिए अथवा

शुद्ध करने के लिए की जाती थी।[2]

आयत 7. *वाचा की पुस्तक का पढ़ा जाना।* पाँचवाँ, मूसा ने लोगों के लिए नियमों को **पढ़ा** और फ़िर से उन्होंने अपनी इच्छा को प्रमाणित किया कि जो **कुछ परमेश्वर ने कहा है** उसके अनुसार वे करेंगे। जैसा जॉन एच. वॉल्टन और विक्टर एच. मैथ्यूस ने नोट किया, "वाचा को फ़िर से नया करने के प्रत्येक समारोह के एक भाग के रूप में जनसाधारण के मध्य वाचा की शर्तों को पढ़ा जाता था (देखें यहोशू 24:25-27; 2 राजा 23:2; नहेम्य. 8:5-9)।"[3] **वाचा की पुस्तक** उन नियमों की ओर संकेत करती है जो परमेश्वर ने दी जिसे मूसा ने लिख लिया और जिन्हें मानने के लिए लोग सहमत हुए थे। इसमें नियम थे अथवा शर्तें थीं जिनके आधार पर परमेश्वर और इस्राएल के बीच वाचा का समझौता आधारित था। उस पुस्तक में लिखित नियमों को माने जाने के आधार पर परमेश्वर और उसके लोगों के बीच वाचा के सम्बन्धों का बना रहना निर्भर करता था।

आयत 8. *लहू का छिड़का जाना।* छठवाँ, व्यवस्था से पढ़ने के बाद और व्यवस्था का पालन करने के लिए लोगों की सहमति के बाद **मूसा** ने शेष **लहू लिया** और वाचा की छाप के चिन्ह के रूप में **उसे लोगों पर छिड़क दिया**। उसने कहा, **"देखो, यह उस वाचा का लहू है।"** जिस प्रकार वेदी को लहू से शुद्ध किया गया अथवा अलग किया गया उसी प्रकार लोगों के लिए भी किया गया। छिड़का हुआ लहू इस सच्चाई का गवाह था कि परमेश्वर ने इस्राएल को बचाया और उन्हें अपने निज लोग बना लिया और अब वे परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने के लिए ज़िम्मेदार हैं।

इस अवसर पर लहू की विधि का महत्व प्रकट नहीं किया गया। आर. एलन कोल ने दो सम्भावनाएं सुझाई। (1) सम्भव है कि इस विधि के माध्यम से परमेश्वर लहू के द्वारा लोगों से स्वयं के सम्बन्ध की घोषणा कर रहा था जिससे इस्राएल और परमेश्वर "एक लहू" के रूप में गिने जाएँ, और परमेश्वर को इस्राएल के पिता और "लहू का बदला लेने वाले" के रूप में देखा जा सके।[4] (2) दूसरी सम्भावना यह है कि उत्पत्ति 15 और यिर्मयाह 34:18 में पाए जाने वाली विधियों की समानता में लहू की यह विधि "इसी प्रकार किसी व्यक्ति के लिए मृत्यु का कारण होनी की समानता के साथ थी जो इस वाचा की शर्तों को न माने।"[5] वॉल्टर ब्रूग्गमेन्न ने लिखा,

> "वाचा का लहू" ... दो दलों के बीच पूर्ण एकता का निर्माण करता है। यह नाटकीय कार्य तार्किक रूप से स्वाभाविक नहीं था परन्तु इस पहचान में कोई सन्देह उत्पन्न नहीं होता कि "लहू" एक ऐसा विशेष तत्व है जो जीवन को सम्भव बनाता है ... । अतः इस कारण इस्राएल अब बलिदान के चढ़ाए जाने के द्वारा अर्थात "वाचा की पुस्तक" और "वाचा के लहू" के द्वारा आज्ञाकारिता के एक नए जीवन की शुरुआत करता है।[6]

कैसर ने कहा कि लहू का छिड़का जाना "समर्पण अथवा शुद्धिकरण की एक प्रक्रिया" का भाग था कि वेदी पर छिड़का गया लहू "परमेश्वर की ओर से दी गई क्षमा और

बलिदान को स्वीकार किए जाने" की ओर संकेत देता है और लोगों पर वह लहू "लहू की एक वाचा" की ओर संकेत करता था जो उन्हें आज्ञाकारी बनने के लिए बाध्य करता था।[7]

आयत 9. *वाचा के भोज में से खाना।* वाचा को दृढ़ करने की यह सातवीं और अन्तिम घटना थी। परमेश्वर के निमन्त्रण पर (24:1, 2), **मूसा** अन्य लोगों को पर्वत पर ले गया - सम्भावित रूप से वे ऊपर जाने के उस मार्ग के एक भाग तक ही पहुँचे थे - जिससे परमेश्वर की उपस्थिति में खाया जा सके। उस भोज में भाग लेने वाले लोगों में **हारून** और उसके बेटे **नादाब** और **अबीहू** थे जो बाद में नष्ट हो गए क्योंकि उन्होंने "उस ऊपरी आग को जिसकी आज्ञा यहोवा ने नहीं दी थी यहोवा के सम्मुख अर्पित किया" था (लैव्य. 10:1, 2)। वहाँ पर **सत्तर पुरनिए** भी थे जिनकी आगे "इस्राएलियों के प्रधानों" (24:11) के रूप में पहचान की गई। इन प्रतिष्ठित लोगों ने सम्भावित रूप से बारह गोत्रों के रूप में सेवा की।[8]

आयत 10. यह पाठ्य इस बात पर बल देता है कि जिन लोगों ने इस भोज में भाग लिया उन्होंने **इस्राएल के परमेश्वर का दर्शन किया**, जो एक ऐसी सच्चाई है जिसे आयत 11 में दोहराया गया है। जैसा कि अन्य स्थानों में बाइबल बताती है कि अब तक किसी ने परमेश्वर को नहीं देखा (33:20; यूहन्ना 1:18; 1 तीमु. 6:16), इन लोगों ने सम्भावित रूप से परमेश्वर का दर्शन करने के स्थान पर परमेश्वर का प्रकाशन पाया। कैसर ने यह सुझाया कि इन लोगों ने परमेश्वर के एक "प्रतिरूप" को देखा (देखें गिनती 12:8; यशा. 6:1; यहेज. 1:26)।[9] जेम्स बर्टमैन कौफ़मैन ने इस बात पर बल दिया कि "उन्होंने परमेश्वर को उसकी सम्पूर्ण अनन्त महिमा में 'आमने-सामने' नहीं देखा" (देखें व्यव. 4:15; 1 तीमु. 6:16; 1 यूहन्ना 4:12)।[10] जैसा कि परमेश्वर "आत्मा" (यूहन्ना 4:24) है - और जैसा कि आत्मिक को शारीरिक आँखों से नहीं देखा जा सकता - इस कारण हो सकता है कि कोई व्यक्ति इस बात पर तर्क करे कि जो व्यक्ति शरीर में है वह परमेश्वर को नहीं देख सकता क्योंकि परमेश्वर वास्तव में अस्तित्व में है।

वहाँ पर उपस्थित लोगों के अनुभव का वर्णन मात्र वही बताता है जो उन लोगों ने उसके **चरणों तले** देखा, मानो वे उसके पाँवों से ऊपर अपनी आँखें उठाकर देखने से डर गए थे अथवा ऊपर देखने के लिए अपनी आँखें भी ऊपर न उठा पा रहे हों। वहाँ जो उन्होंने देखा वह **नीलमणि का चबूतरा सा कुछ था, जो आकाश के तुल्य ही स्वच्छ था**।

आयत 11. यहाँ पर असाधारण प्राकृतिक दृश्य को नोट किया गया है। इस्राएल के प्रधानों ने परमेश्वर का "दर्शन" किया **फ़िर भी उसने** उन पर **हाथ नहीं बढ़ाया**। ब्रूग्गमेन्न ने कहा कि "वहाँ का दृश्य अचेत कर देने वाली और चकित कर देने वाली चुप्पी का सुझाव देता है। उन्होंने देखा और वे ऐसे हो गए थे मानो वे अब स्वयं के वश में न रहे हों। उन्होंने कुछ नहीं बोला; वे वहाँ से हिले भी नहीं ... यहाँ पर बताया गया वर्णन इस झुकाव के साथ है कि हम अचेत, हैरानी और अकेले और डर से पूर्ण जैसी स्थिति में छोड़ दिए जाएँ।"[11] अन्य शब्दों में, "उन्होंने परमेश्वर का दर्शन किया और उसने उन पर हाथ नहीं बढ़ाया!"

जो लोग वहाँ पर उपस्थित थे उन्होंने परमेश्वर के साथ अभी जो वाचा उन्होंने बाँधी थी उसका उत्सव मनाने के लिए एक भोज अथवा पर्व में भाग लेते हुए **खाया पीया**। हालांकि ऐसा नहीं कहा गया है कि परमेश्वर ने उनके साथ खाया पीया फ़िर भी उसकी उपस्थिति को नोट किया जा सकता है। वाचा के एक पक्ष के रूप में वह वहाँ पर उपस्थित था।

व्यवस्था प्राप्त करना (24:12-18)

[12]तब यहोवा ने मूसा से कहा, "पहाड़ पर मेरे पास चढ़ आ, और वहीं रह; और मैं तुझे पत्थर की पटियाएँ, और अपनी लिखी हुई व्यवस्था और आज्ञा दूँगा कि तू उनको सिखाए।" [13]तब मूसा यहोशू नामक अपने सेवक समेत परमेश्वर के पर्वत पर चढ़ गया। [14]और पुरनियों से वह यह कह गया, "जब तक हम तुम्हारे पास फिर न आएँ तब तक तुम यहीं हमारी बाट जोहते रहो; और सुनो, हारून और हूर तुम्हारे संग हैं; यदि किसी का मुक़द्दमा हो तो उन्हीं के पास जाए।" [15]तब मूसा पर्वत पर चढ़ गया, और बादल ने पर्वत को छा लिया। [16]तब यहोवा के तेज ने सीनै पर्वत पर निवास किया, और वह बादल उस पर छ: दिन तक छाया रहा; और सातवें दिन उसने मूसा को बादल के बीच में से पुकारा। [17]इस्राएलियों की दृष्टि में यहोवा का तेज पर्वत की चोटी पर प्रचण्ड आग के समान दिखाई पड़ता था। [18]तब मूसा बादल के बीच में प्रवेश करके पर्वत पर चढ़ गया। और मूसा पर्वत पर चालीस दिन और चालीस रात रहा।

आयत 12. मूसा ने परमेश्वर से एक अन्य निर्देश प्राप्त किया कि वह **पहाड़ पर** उसके **पास चढ़** आए। मूसा ने सम्भावित रूप से यह सन्देश उस समय प्राप्त कर लिया था जिस समय वह पुरनियों के साथ उत्सव में भाग ले रहा था। अन्य शब्दों में वे पर्वत पर चढ़ने के एक भाग तक ही पहुँचे थे और परमेश्वर मूसा को अपनी उपस्थिति में आने के लिए उससे भी ऊपर बुला रहा था। इस आज्ञा का प्रयोग कि "केवल मूसा ही ... परमेश्वर के पास आए" (24:2), इस स्थिति के समर्थन के लिए किया जा सकता है।

अन्य सम्भावना यह है कि परमेश्वर ने मूसा को जिस समय "ऊपर आने" की आज्ञा दी उस समय मूसा और पुरनिए तम्बू में लौट आए थे। यह सच्चाई कि मूसा ने हारून और हूर को लोगों के मुकद्दमों पर अधिकारी ठहरा दिया इस बात का सुझाव देता है कि वे लोगों के बीच ही रुके रहे (24:14; देखें 18:26)। इससे अधिक मूसा जब चालीस दिन बाद पर्वत से नीचे उतर कर आया तब हारून तम्बू में ही था (अध्याय 32)।

इस अवसर पर पर्वत पर चढ़ने के लिए मूसा की यात्रा का उद्देश्य यह था कि परमेश्वर के द्वारा **पत्थर की पटियाओं** पर **लिखी हुई** व्यवस्था को प्राप्त किया जा सके। पत्थर की इन पटियाओं पर व्यवस्था का कौन सा भाग लिखा हुआ था इसके बारे में विद्वान विभिन्न मत रखते हैं - क्या ये मात्र दस आज्ञाएँ थी अथवा इन पर

अन्य नियम भी लिखे हुए थे। कोल ने कहा कि "परिणाम की दृष्टि से," **व्यवस्था और आज्ञा** "मात्र दस शब्दों की ओर संकेत करते हैं।"[12] ये पटियाएँ "साक्षी देनेवाली पत्थर की तख़्तियाँ" (31:18) और "वाचा के पत्थर की पटियाएँ" (व्यव. 9:9) भी कहलाती हैं।

आयतें 13, 14. तब **मूसा**, **यहोशू** को अपने साथ लेकर ऊपर चढ़ गया। फ़िर भी ऊपर चढ़ने से पहले उसने **पुरनियों** से कहा कि वे उसके लिए वहाँ पर **रुकें**। अगर वे उस स्थान में थे जहाँ पर उन्होंने उत्सव मनाया था तो सम्भावित रूप से मूसा के कहने का अर्थ यह था कि वे वहाँ पर "ठहरें।" फ़िर भी अगर वे तम्बू में थे तो उसके कहने का अर्थ यह रहा होगा कि वे लोगों के बीच ही ठहरे रहें। स्थिति चाहे जो भी रही हो, मूसा ने यह नहीं चाहा कि वे उस समय उसके पीछे आएँ जब वह पर्वत पर चढ़ने जा रहा था।

किसी भी प्रकार **के कानूनी मामलों** पर निर्णय लेने के लिए मूसा ने **हारून और हूर** को वहीं पीछे छोड़ दिया। सामान्य रूप से न्याय करने की ज़िम्मेदारी मूसा की थी, परन्तु इस समय वह वहाँ पर उपलब्ध नहीं रहेगा। ऐसा भी हो सकता है कि वे "पुरनिए" जिनकी गिनती "सत्तर" पुरुषों के रूप में की गई थी (24:1), वे न्यायी लोग थे जिन्हें सरल मामलों को निपटाने के लिए नियुक्त किया गया हो (18:22, 23 पर टिप्पणी देखें)।

आयत 15. तब **मूसा पर्वत पर चढ़ गया, और बादल ने पर्वत को छा लिया।** इस दृश्य के बारे में कल्पना करें: मूसा "उस स्थान तक जाता है जहाँ पर अब तक कोई नहीं गया। वह मानव क्षेत्र को छोड़ता है और परमेश्वर के क्षेत्र में प्रवेश करता है। वहाँ पर वह चालीस दिन और चालीस रात ठहरता है ... । कोई भी व्यक्ति, न तो हारून और न ही इस्राएल ... जानता है कि वह वहाँ से वापस आ पाएगा या नहीं।"[13]

आयतें 16-18. तब **यहोवा के तेज ने सीनै पर्वत पर निवास किया, और ... उस पर छ: दिन तक छाया रहा।** नीचे इस्राएलियों की दृष्टि में **यहोवा का तेज पर्वत की चोटी पर प्रचण्ड आग के समान दिखाई पड़ता था। सातवें दिन** परमेश्वर ने मूसा को बादल के बीच में से पुकारा। मूसा ने बादल के बीच में, परमेश्वर की गहन उपस्थिति में प्रवेश किया और वहाँ पर **चालीस दिन और चालीस रात रहा।** जब परमेश्वर मूसा से मिला, जिसने "परमेश्वर की उँगली से लिखी" हुई पत्थर कि पटियाएँ प्राप्त की उस समय परमेश्वर की महिमा से वह स्थान ढक लिया गया (31:18)।

अनुप्रयोग

वह सब करना जैसा परमेश्वर ने कहा है (24:3, 7)

मूसा ने लोगों के पास जाकर यहोवा की सब बातें और सब नियम सुना दिए और तब सब लोग एक स्वर में बोल उठे कि जितनी बातें यहोवा ने कही हैं उन सब बातों को वे लोग मानेंगे। क्या इस प्रकार कहने की इच्छा हम रखते हैं? कभी-

कभी लोग परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने के प्रति किसी प्रकार की इच्छा नहीं रखते। उदाहरण के लिए, कभी-कभी लोग सम्भावित रूप से बपतिस्मा लेने की आज्ञा का अनदेखा करते हैं अथवा उसका विरोध करते हैं। आइए परमेश्वर ने जैसा कहा है उस प्रकार पहले उसके राज्य की खोज करते हुए उसकी उन सब आज्ञाओं का पालन करने के लिए ज़ोर लगाएँ (मत्ती 6:33)।

लहू के द्वारा शुद्ध किए गए (24:5-8)

लहू के द्वारा परमेश्वर और इस्राएल के बीच की वाचा को दृढ़ किया गया। जानवरों का बलिदान चढ़ाया गया और तब वेदी पर और लोगों पर लहू छिड़का गया (24:5-8)। इब्रानियों 9:18-20 उस अवसर की ओर संकेत करता है। यह सन्दर्भ वेदी और तम्बू के समर्पण में लहू के प्रयोग के बारे में बताता है (इब्रा. 9:21; देखें निर्गमन 29:12, 36; लैव्य. 8:15, 19)। इब्रानियों 9:22 अधिक सामान्य रूप से संकेत देता है कि "सब वस्तुएँ" लहू के द्वारा शुद्ध की गईं, जो सम्भावित रूप से उन बलिदानों के बारे में बता रहा है जो पापों की क्षमा के लिए प्रतिदिन बलिदान के रूप में चढ़ाई जाती थी।

इब्रानियों का लेखक क्या कह रहा था? व्यवस्था के अनुसार प्रायः "बिना लहू बहाए पापों की क्षमा नहीं [थी]" (इब्रा. 9:22)। जो लोग नई वाचा के अन्तर्गत जीते हैं वे उत्तम बलिदान - स्वयं यीशु के बलिदान - से लाभ प्राप्त करते हैं। उसका बलिदान उत्तम है क्योंकि उसने सच्चे पवित्रस्थान स्वर्ग में प्रवेश किया (इब्रा. 9:24); उसने बार-बार के बलिदान के स्थान पर एक बार ही स्वयं को बलिदान कर दिया (इब्रा. 9:25, 26); जानवरों के बलिदानों के अन्तर में उसने पाप को दूर करने के लिए स्वयं को बलिदान कर दिया (इब्रा. 9:26; 10:4)। उसके लहू ने कलीसिया को मोल ले लिया (प्रेरितों 20:28)। उसके लहू ने हमें बचा लिया है (इफ़ि. 1:7), यह हमें बचा रहा है (1 यूहन्ना 1:7), और अनन्तकाल तक हमें बचाता रहेगा (प्रका. 7:14)।

"वाचा का लहू" (24:8)

यीशु जब प्रभु-भोज को स्थापित कर रहा था उस समय सीनै का दृश्य उसके मन में था। उसने कहा, "यह वाचा का मेरा वह लहू है, जो बहुतों के लिये पापों की क्षमा के निमित्त बहाया जाता है" (मत्ती 26:28)। जब यीशु की मृत्यु हुई तब वह "नई वाचा" को अस्तित्व में ले आया (देखें यिर्म. 31:31-34)। जिस प्रकार लहू के द्वारा दृढ़ की गई वाचा के द्वारा इस्राएली लोग परमेश्वर के साथ बँधे हुए थे उसी प्रकार यीशु के चेले भी यीशु के साथ बँधे हुए हैं। "परमेश्वर के मेम्ने" के लहू के द्वारा नई वाचा स्थापित की गई।

परमेश्वर के साथ खाना पीना (24:9-11)

निर्गमन 24 में परमेश्वर ने उस वाचा को प्रमाणित किया जो उसने अध्याय

19 में इस्राएलियों के साथ बाँधी थी। दोनों पक्ष - परमेश्वर और इस्राएल - वाचा की शर्तों पर पहले से ही सहमत थे। निर्गमन 24 में वर्णित पर्वों के द्वारा, वाचा प्रभावी बन गई। अध्याय 19 को वर्तमान की अचल संपत्ति की अदला-बदली के समान देखा आ सकता है; निर्गमन 24 में दी गई धार्मिक रीति को किसी समझौते की पूर्ति की समानता में देखा जा सकता है।

अध्याय 24 में वर्णित समारोह निम्नलिखित को शामिल करते थे: (1) मूसा के द्वारा व्यवस्था को फ़िर से दोहराना और व्यवस्था को मानने के लिए लोगों के द्वारा व्यवस्था के प्रति अपनी प्रतिज्ञा को दोहराना (24:3); (2) भावी पीढ़ियों के लिए व्यवस्था को लिखना (24:4); (3) वेदी का निर्माण करना (24:4); (4) बलिदान चढ़ाना और वेदी पर लहू छिड़का जाना (24:5, 6); (5) व्यवस्था का पढ़ा जाना और व्यवस्था का पालन करने के लिए इस्राएली लोगों के द्वारा अपनी प्रतिज्ञा को फ़िर से दोहराना (24:7); (6) लोगों पर लहू का छिड़का जाना (24:8); और (7) परमेश्वर के साथ संगति भोज में से खाना (24:9-11)। इस समय इस्राएल के प्रधानों के लिए यह कहा गया कि उन्होंने परमेश्वर का दर्शन किया (24:10)।

पुराना नियम समय में दो पक्षों के बीच की वाचा पर छाप देने के लिए एक भोज में एक-साथ सहभागी होने को शामिल किया जाता था। इस मामले में वाचा इस्राएल और परमेश्वर के बीच थी इस कारण इस्राएल ने परमेश्वर के साथ इस भोज में भाग लिया। वे लोग "परमेश्वर के साथ खा रहे थे"! आइए ऐसे तरीकों के बारे में विचार करें जिनके द्वारा वर्तमान में हम "परमेश्वर के साथ खा पी" सकते हैं।

मसीही व्यक्ति बनने के द्वारा हम विवाह के भोज में भागीदार हो जाते हैं (मत्ती 22:1-14)। एक अर्थ में हम मात्र मसीही व्यक्ति बनने के द्वारा "परमेश्वर के साथ खा पी रहे हैं।" हम उसके साथ संगति रखते हैं; हम "जीवित जल" का आनन्द लेते हैं और "जीवन की रोटी" में से खाते हैं।

मसीही व्यक्ति होने कारण जब हम प्रभु भोज में भाग लेते हैं तब हम "परमेश्वर के साथ खाते पीते हैं।" जब यीशु प्रभु भोज को स्थापित कर रहा था तब उसने कहा, "मैं तुम से कहता हूँ कि दाख का यह रस उस दिन तक कभी न पीऊँगा, जब तक तुम्हारे साथ अपने पिता के राज्य में नया न पीऊँ" (मत्ती 26:29)। इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर के राज्य में वह हमारे साथ खाएगा और पीएगा। जब हम प्रभु भोज में भाग लेते हैं तब हम मात्र अपने साथी मसीही लोगों के साथ ही भाग नहीं लेते जिन्हें हम देख सकते हैं परन्तु मसीह के साथ भी भाग लेते हैं जिसे हम देख नहीं सकते। प्रभु भोज को "परमेश्वर की मेज़" के रूप में बताया गया है (1 कुरि.यों 10:21; देखें मत्ती 18:20)।

जब हम अन्य मसीही लोगों के साथ भोज और संगति में भागीदार होते हैं तो एक अर्थ में हम परमेश्वर के साथ भी खा पी रहे होते हैं। नया नियम की कलीसिया में एक साथ खाना सामान्य बात थी (प्रेरितों 2:46; 1 कुरि. 11)। भोज में शामिल होना एक कारण था, एक प्रभाव था और परमेश्वर के परिवार में एक-दूसरे के साथ

निकटता का चिन्ह था।

मसीही लोग भोज के समय को ऐसे अवसरों के रूप में देखें मानो हम "परमेश्वर के साथ खा पी रहे" हैं। जब हम अपने भोजन के लिए धन्यवाद देते हैं तब उसकी उपस्थिति की पहचान करते हैं (लूका 24:30; यूहन्ना 6:11; रोमियों 14:6; 1 तीमु. 4:4, 5)। परिवार के रूप में जब हम इस प्रकार एक-साथ खाते और पीते हैं तब उसके स्मरण को आगे रखते हैं क्योंकि इस प्रकार "पारिवारिक संगति" का स्वभाव रखना अपने बच्चों के लिए कुछ अन्य कार्य करने की तुलना में बहुत कुछ करने से बढ़कर है। हम अपने जीवन को समृद्ध करते हैं और अपने परिवारों के साथ समय बिताते हुए आत्मिक विषयों पर बात करने के द्वारा परमेश्वर की महिमा करते हैं (व्यव. 6:7)। पारिवारिक आराधना के लिए जब हम पारिवारिक भोजों का प्रयोग करते हैं तब हम स्वयं को परमेश्वर की ओर अधिक निकटता में बाँध लेते हैं।

स्वर्ग में हम एक अनन्त भोज में दिव्य संगति का आनन्द लेंगे; एक अर्थ में हम सदैव के लिए "परमेश्वर के साथ खाएँगे और पीएँगे।" जो लोग परमेश्वर के लिए जीवन जीते हैं उन लोगों के लिए स्वर्गीय भोज जैसा कुछ है जो प्रतीक्षा कर रहा है (लूका 22:30; प्रका. 19:9)। प्रकाशितवाक्य 22:1, 2 की अलंकारिक भाषा के अनुसार स्वर्ग में एक सुन्दर नदी है जो परमेश्वर के सिंहासन से बह रही है जो पीने के लिए शुद्ध जल का अर्थ प्रदान करती है। जीवन का वृक्ष अलग-अलग प्रकार के फ़ल उत्पन्न करता है जो खाने के लिए विभिन्न स्वादिष्ट भोजन के बारे में बताता है। यह वास्तविकता कि स्वर्गिक यरूशलेम का चित्रण कि "वह उस दुल्हन के समान थी जो अपने पति के लिये सिंगार किए हो" (प्रका. 21:2) सम्भावित रूप से ऐसा सुझाव देती है कि परमेश्वर स्वर्ग की तुलना विवाह के भोज के साथ कर रहा है। वहाँ पर हमारी निकट संगति "परमेश्वर के साथ खाने और पीने" के समान ही होगी।

निष्कर्ष। इस्राएल के प्रधानों को परमेश्वर के साथ खाने का सौभाग्य मिला और वही सौभाग्य हम भी प्राप्त कर सकते हैं। यीशु हमारे हृदयों के द्वार पर खटखटाता है जिससे कि वह भीतर आए और हमारे साथ भोजन करे (प्रका. 3:20)। आइए उसकी इच्छा का पालन करने के द्वारा उसकी संगति के लिए सदैव स्वयं को खुला रखें।

समाप्ति नोट्स

[1]वॉल्टर सी. कैसर, जूनियर., "एक्सोडस," इन *द एक्सपोज़िटर्स बाइबल कमेन्ट्री*, वॉल्यूम 2, *जेनेसिस-नम्बर्स* (ग्रान्ड रेपिड्स, मिशिगन: जोनडर्वन, 1990), 449. [2]उपरोक्त। [3]जॉन एच. वॉल्टन एन्ड विक्टर एच. मैथ्यूस, *जेनेसिस-ड्यूट्रोनोमी*, द आईवीपी बाइबल बेकग्राउन्ड कमेन्ट्री (डाउनर्स ग्रोव, Ill.: इन्टरवर्सिटी प्रेस, 1997), 121. [4] आर. एलेन कोल, *एक्सोडस: एन इन्ट्रोडक्शन एण्ड कमेंट्री,* टिंडेल ओल्ड टेस्टामेंट कमेंट्रीज (डॉनर्स ग्रूव, इलिनोय: इंटर-वार्सिटी प्रेस, 1973), 185-86. [5]उपरोक्त। [6]वॉल्टर ब्रूगमेन्न, "द बुक ऑफ़ एक्सोडस," इन *द इन्टरप्रिटर्स बाइबल,* एडिशन. लिएन्डर ई. कैक (नाशविले: ऐबिंगडन प्रेस, 1994), 1:881. [7]कैसर, 449. [8]वॉल्टन एन्ड मैथ्यूस, 120.

[9]कैसर, 449. [10]जेम्स बर्टन कौफ़्फमैन, *कमेन्ट्री ऑन एक्सोडस, द सेकन्ड बुक ऑफ़ मोसिस* (अबिलीन, टेक्स.: ए सीयूप्रेस, 1985), 348.

[11]ब्रूग्गमेन्न, 881. [12]कोल, 187. [13]ब्रूग्गमेन्न, 882.